# उपनिवेशवाद का द्वितीय चरण
# औद्योगिक चरण ( 1813-1858 )

**उद्देश्य- भारत को विर्निमित उत्पादों के आयातक तथा कच्चे माल के निर्यातक के रूप में परिवर्तित करना।**

| राजनीतिक नीति | प्रशासनिक नीति | आर्थिक नीति | सामाजिक नीति | सांस्कृतिक नीति |
|---|---|---|---|---|
| साम्राज्यवादी प्रसार पर बल ताकि अधिक-से-अधिक भारतीय राज्यों को प्रत्यक्ष नियंत्रण में लिया जा सके। | प्रशासनिक ढाँचे में व्यापक सुधार एवं परिवर्तन को प्रोत्साहन देना। | कृषि का व्यवसायीकरण, भारतीय हस्तशिल्प उद्योगों को धक्का पहुँचाना, रेलवे, टेलीग्राफ, डाक विभाग, सड़क मार्ग आदि का निर्माण। | समाज सुधार के लिये विधि-निर्माण करना तथा अंग्रेज़ी शिक्षा के माध्यम से नए सामाजिक वर्गों को जन्म देना। | उदारवादी तथा उपयोगितावादी विचारधारा की प्रगति तथा भारत पर उसका प्रभाव। |

## उपनिवेशवाद का औद्योगिक चरण ( 1813-58 )

यह वह काल था जब ब्रिटेन में औद्योगिक क्रांति की शुरूआत हो चुकी थी तथा लंदन, मैनचेस्टर, बर्मिंघम, ग्लास्गो आदि शहर महत्वपूर्ण औद्योगिक क्षेत्र के रूप में विकसित हो चुके थे। इसी क्रम में एक शक्तिशाली औद्योगिक पूँजीपति वर्ग अस्तित्व में आया और वह सरकार की नीति को प्रभावित करने लगा। उस वर्ग के दबाव में 1813 का अधिनियम प्रभाव में लाया गया। इसके तहत भारत का दरवाजा ब्रिटिश विनिर्मित वस्तुओं के लिए खोल दिया गया और ब्रिटिश कंपनी से अपेक्षा की गई की वह भारत का प्रशासन संभाले तथा भारत में ब्रिटिश वस्तुओं के बाजार के विकास हेतु काम करे।

फिर यही समय था कि ब्रिटिश उद्योगों के लिए कच्चे माल और ब्रिटिश नगरीय जनसंख्या के लिए अनाज की आवश्यकता महसूस हुई। इस कारण भारत से कच्चे माल का निर्यात होने लगा। इस तरह, कुल मिलाकर भारत विनिर्मित वस्तुओं का आयातक व कच्चे माल के निर्यातक के रूप में परिवर्तित हो गया।

अब भारत के संदर्भ में नवीन ब्रिटिश औपनिवेशिक हित उसकी तमाम नीतियों यथा राजनीतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक सभी को प्रभावित करना शुरू किया।

## औद्योगिक चरण ( राजनीतिक नीति )

भारत को एक सशक्त बाज़ार के रूप में विकसित करने के लिये कंपनी ने अधिक-से-अधिक क्षेत्रों को प्रत्यक्ष नियंत्रण में लेने पर बल दिया। अत: इस चरण में भारत आने वाले गवर्नर जनरलों ने विस्तारवादी नीति का अनुसरण करते हुए ब्रिटिश साम्राज्य के व्यापक विस्तार पर बल दिया।

### लॉर्ड हेस्टिंग्स ( 1813-23 )

- **आंग्ल-नेपाल युद्ध ( 1814-15 )**- नेपालियों को पराजित कर उन्हें सुगौली की संधि (1816) पर हस्ताक्षर करने के लिये बाध्य किया। इस संधि के अनुसार सिक्किम पर नेपाली अधिकार समाप्त हो गया। कुमाऊँ एवं गढ़वाल सहित तराई का अच्छा-खासा भाग ब्रिटिश भारत में विलय कर लिया गया।
- **तृतीय आंग्ल-मराठा युद्ध ( 1817-18 )**- इस युद्ध में मराठा शक्ति अंतिम रूप से समाप्त हो गई। लॉर्ड हेस्टिंग्स के अंतर्गत ब्रिटिश सेना ने पेशवा, भोंसले और होल्कर की संयुक्त शक्ति को हराया। 1818 ई. में पेशवा के साथ संधि कर मराठा परिसंघ को भंग कर दिया गया तथा बाजीराव द्वितीय को आठ लाख के वार्षिक पेंशन पर बिठूर भेज दिया गया।

### लॉर्ड एमहर्स्ट ( 1823-28 )

- इसके शासनकाल में प्रथम आंग्ल-बर्मा युद्ध (1824-26) घटित हुआ, जिसमें कंपनी ने बर्मा को हराकर उसके साथ यान्दोबो की संधि (24 फरवरी, 1826) की। यान्दोबो की संधि के आधार पर कंपनी ने बर्मा से बहुत-सी रियायतों की मांग की।

### विलियम बेंटिक ( 1828-35 )

- बेंटिक ने साम्राज्यवादी प्रसार एवं विलय की नीति जारी रखते हुए 1830 ई. में कछार, 1831 ई. में मैसूर, 1834 ई. में कुर्ग तथा 1835 ई. में जयंतिया को साम्राज्य में मिला लिया।

### ऑकलैंड ( 1836-42 )

- इसके शासनकाल में प्रथम आंग्ल-अफगान युद्ध (1839-41) हुआ, लेकिन अंग्रेज़ों के लिये यह युद्ध एक त्रासदी सिद्ध हुआ। इसमें ब्रिटिश सेना अफगानों के हाथों पिट गई।

### एलेनबरो ( 1842-44 )

- इसने 1843 ई. में सिंध का अधिग्रहण किया।

### लॉर्ड हार्डिंग ( 1844-48 )

- इसके शासनकाल में प्रथम आंग्ल-सिख युद्ध (1845-46) लड़ा गया। इसमें पराजित होने के बाद सिखों ने कंपनी के साथ लाहौर (1846 में) की संधि की। लाहौर की संधि के तहत कंपनी ने कश्मीर पर अधिकार कर लिया।

### लॉर्ड डलहौज़ी ( 1848-56 )

- इसने ब्रिटिश साम्राज्य के विस्तार के लिये दो तरीके अपनाए-

**1. युद्ध के माध्यम से विस्तार:-**

- द्वितीय आंग्ल-सिख युद्ध (1849) के बाद पंजाब पर अधिकार कर लिया।
- सिक्किम का अधिग्रहण (1850)
- द्वितीय आंग्ल-बर्मा युद्ध के द्वारा 1852 ई. में लोअर बर्मा अथवा पेगू को ब्रिटिश साम्राज्य में मिला लिया गया।
- 1853 ई. में बरार के कपास उत्पादक क्षेत्र को निज़ाम से छीन लिया।

**2. विचारधारा के माध्यम से-**

- **व्यपगत का सिद्धांत**- वे राज्य, जो ब्रिटिश सनद द्वारा निर्मित किये गए थे, उन्हें अपने उत्तराधिकारी के चयन के लिये गोद लेने का अधिकार नहीं प्रदान किया गया। इन राज्यों पर लॉर्ड डलहौज़ी ने अत्यंत निर्ममता से व्यपगत सिद्धांत (Doctrine of Lapse) लागू किया। इस नीति के तहत सतारा, जैतपुर, संभलपुर, बघाट, उदयपुर, झाँसी तथा नागपुर का ब्रिटिश साम्राज्य में विलय कर लिया गया।
- **कुशासन के आधार पर** - 1856 ई. में अवध का विलय।

**प्रश्न: 19वीं सदी के पूर्वार्द्ध में भारतीय राज्यों के संबंध में ब्रिटिश कंपनी की नीति ब्रिटिश औद्योगिक पूँजीवाद के हित से प्रेरित थी। परीक्षण कीजिए।**

**उत्तर:** 19वीं सदी में ब्रिटिश औद्योगिक पूँजीवाद के विकास ने भारतीय राज्यों के संबंध में ब्रिटिश नीति में व्यापक परिवर्तन ला दिया। चूँकि अब ब्रिटिश औद्योगिक पूँजीवाद के हित में भारत का विकास ब्रिटिश वस्तुओं के बाजार के रूप में किया जाना था, इसलिए अधिक-से-अधिक भारतीय राज्यों को प्रत्यक्ष नियंत्रण में लेना आवश्यक था। यह एक प्रमुख कारण था कि इस काल में लॉर्ड हेस्टिंग्स से डलहौजी तक जितने भी गवर्नर-जनरल आये उन सभी ने युद्ध और विलय की नीति पर बल दिया।

लॉर्ड हेस्टिंग्स ने आंग्ल-नेपाल युद्ध के पश्चात् नेपाल से एक बड़ा भू-भाग प्राप्त कर लिया। उसी प्रकार, लॉर्ड एमहर्स्ट ने प्रथम आंग्ल-बर्मा युद्ध के पश्चात् बर्मा से कुछ भू-भाग प्राप्त कर लिया, तो डलहौजी ने आगे सम्पूर्ण बर्मा का ही विलय कर लिया।

आगे ऑकलैण्ड, एलनबोरो और हार्डिंग सभी ने युद्ध और विलय की नीति जारी रखी। फिर डलहौजी ने इस नीति को सर्वोच्च शिखर पर पहुँचा दिया जब उसने युद्ध और विचारधरा का सहारा लेकर पंजाब से अवध तक ब्रिटिश भारत के मानचित्र को शीघ्रता से बदल दिया।

इस प्रकार, ब्रिटिश औद्योगिक पूँजीवाद और ब्रिटिश साम्राज्यवाद के बीच सीधा संबंध था।

**प्रश्न : जहाँ डलहौजी के पूर्वजों का उद्देश्य जहाँ तक संभव हो सके भारतीय राज्यों के विलय को टालना था वहीं डलहौजी ने युद्ध एवं विलय के कोई भी अवसर को नहीं छोड़ा। परीक्षण कीजिए।**

**उत्तर:** भारतीय राज्यों के संदर्भ में डलहौजी तथा उसके पूर्वजों के बीच नीतियों के अंतर को बदलते हुए ब्रिटिश औपनिवेशिक हित के संदर्भ में समझने की जरूरत है।

18वीं सदी तक भारत के सन्दर्भ में ब्रिटिश नीति वाणिज्यिक पूँजीवाद से प्रेरित रही थी। इस काल में भारत के सन्दर्भ में ब्रिटिश हित व्यापार में निवेश तक सीमित था। इसलिए कम्पनी का उद्देश्य था जहाँ तक संभव हो सके भारतीय राज्यों के साथ युद्ध और विलय को टालना। परन्तु 19वीं सदी में भारतीय राज्यों के संदर्भ में ब्रिटिश कम्पनी की नीति औद्योगिक पूँजीवाद के हित से प्रेरित हो रही थी। अत: इसका प्रयास था अधिक-से-अधिक भारतीय राज्यों को प्रत्यक्ष नियत्रंण में लेना ताकि भारतीय क्षेत्र को कच्चे माल के निर्यातक और विनिर्मित वस्तुओं के आयातक के रूप में परिवर्तित किया जा सके। इसलिए इस काल में जो भी ब्रिटिश प्रशासक आये उन्होंने युद्ध और विलय की नीति पर बल दिया। लॉर्ड डलहौजी के काल में इस नीति का चरमोत्कर्ष देखा जा सकता था।

डलहौजी ने विलय के किसी अवसर को नहीं छोड़ा और उसके लिए युद्ध एवं विचारधारा दोनों का सहारा लिया। उदाहरण के लिए, युद्ध के माध्यम से उसने पंजाब, लोअर बर्मा आदि क्षेत्र का विलय कर लिया। युद्ध के अतिरिक्त उसने व्यपगत के सिद्धांत एवं कुशासन की अवधारणा जैसी विचारधाराओं का भी सहारा लिया।

व्यपगत के सिद्धांत के आधार पर उसने सतारा, संबलपुर, झाँसी, नागपुर अर्थात् कुल सात राज्यों को मिलाया।

वहीं अवध के आर्थिक और सामरिक महत्व को देखते हुए कुशासन की अवधारणा के आधार पर उसका विलय किया।

***प्रश्नः डलहौजी ने ब्रिटिश भारत के मानचित्र को इतनी शीघ्रता से बदल दिया जो केवल युद्ध के माध्यम से संभव नहीं हो पाता। परीक्षण कीजिए।***

## औद्योगिक चरण ( प्रशासनिक नीति )

### कानून व्यवस्था का सुदृढ़ीकरण-

ब्रिटिश विनिर्मित वस्तुओं के लिये भारत को बाज़ार के रूप में विकसित करने हेतु कंपनी ने प्रशासनिक सुधारों पर विशेष बल दिया-

- लॉर्ड हेस्टिंग्स ने 1816-17 ई. में पिंडारियों का दमन किया। पिंडारी लूटपाट करने वाले लोगों का गिरोह था, इसमें हिंदू एवं मुसलमान, दोनों शामिल थे। ये मराठों की सेना में सहायक के रूप में कार्य करते थे।
- विलियम बेंटिक ने ठगी के अंत के लिये कर्नल स्लीमैन को नियुक्त किया।

### न्यायिक सुधार-

- उपयोगितावादी विचारधारा का प्रभाव न्यायिक सुधारों पर भी पड़ने लगा। इसी क्रम में बेंथम ने भारतीय न्याय व्यवस्था/प्रणाली में व्याप्त मूलभूत खामियों की ओर ब्रिटिश सरकार का ध्यान आकर्षित किया।
- 'विधि के संहिताकरण' के लिये 1833 ई. के चार्टर अधि नियम में एक विधि सदस्य की नियुक्ति का प्रावधान किया गया। परिणामस्वरूप मैकाले संहिता का निर्माण हुआ, जिसे 1857 के विद्रोह के बाद लागू किया गया। फिर इंडियन सिविल कोड और भारतीय दंड संहिता क्रमशः 1859 और 1860 में अस्तित्व में आई।
- उच्च न्यायालय अधिनियम, 1861 के द्वारा पुराने सुप्रीम कोर्ट और सदर दीवानी व निज़ामत अदालतों को समाप्त कर कलकत्ता, मद्रास तथा बंबई में उच्च न्यायालयों की स्थापना की गई।

### भू-राजस्व संबंधी सुधार-

- इस काल तक ब्रिटिश पूंजीपति वर्ग और भारतीय सरकार के मध्य भी द्वंद्व की स्थिति उत्पन्न हो गई। जहाँ ब्रिटिश पूंजीपति वर्ग ने ब्रिटिश वस्तुओं की खरीद के लिये भारतीय क्रय शक्ति क्षमता को दृष्टिगत रखते हुए भू-राजस्व की दर कम रखने का समर्थन किया, वहीं ब्रिटिश भारत सरकार की भी अपनी मजबूरियाँ थीं। इसलिये, अंत में भारतीय सरकार ने व्यापक विचार-विमर्श के बाद ज़मींदारों की भूमिका को समाप्त करने का निर्णय लिया।
- इसके अतिरिक्त डेविड रिकार्डो के 'लगान सिद्धांत' में भी ज़मींदार को परजीवी मानकर उत्पादन में उनके महत्त्व को नकार दिया गया था।
- अतः रैयतवाड़ी और महालवाड़ी भू-राजस्व व्यवस्था में सीधे काश्तकारों एवं ग्राम समूहों से भू-राजस्व वसूल करने की व्यवस्था की गई और ज़मींदारों एवं मध्यस्थों को इससे बाहर रखने का प्रयास किया गया।

### रैयतवाड़ी व्यवस्था

- यह मद्रास एवं बंबई प्रेसीडेंसी तथा कुछ अन्य भागों में लागू हुई थी। इसके अंतर्गत ब्रिटिश भारत का 51 प्रतिशत भाग सम्मिलित था।
- प्रत्येक पंजीकृत किसान को भूमि का स्वामी मान लिया गया तथा उसके साथ व्यक्तिगत स्तर पर भू-राजस्व समझौता किया गया था।
- यहाँ भी भूमि को विक्रय योग्य बना दिया गया।
- सामुदायिक संपत्ति, अर्थात् चरागाह भूमि, बंजर भूमि, सिंचाई भूमि, जंगल आदि को किसान की जगह सरकार के स्वामित्व में रख दिया गया।
- किसानों के साथ भू-राजस्व का प्रबंधन स्थायी रूप में न करके अस्थायी रूप में किया गया।

**उद्देश्य-**

1. मद्रास प्रेसीडेंसी में कंपनी खर्चीले युद्ध में उलझी हुई थी, अतः उसे बड़ी मात्रा में धन की ज़रूरत थी।
2. कंपनी स्थायी बंदोबस्त के कारण कृषि उत्पादन के भावी लाभ से वंचित हो रही थी, इसलिये स्थायी बंदोबस्त व्यवस्था से कंपनी का मोहभंग हो गया था।
3. पश्चिम भारत एवं दक्षिण भारत में ज़मींदार वर्ग जैसा कोई स्पष्ट वर्ग नहीं था।

**प्रभाव-**

1. रैयतवाड़ी व्यवस्था में रैयतों की सुरक्षा से संबंधित उद्देश्य पूर्ण नहीं हो सका, क्योंकि इन क्षेत्रों में कई ज़मींदारों के स्थान पर स्वयं सरकार एक बड़े तथा शोषक ज़मींदार के रूप में स्थापित हो गई।
2. भू-राजस्व की एक बड़ी रकम को चुकता करने के लिये किसान महाजनों से कर्ज़ लेने को विवश हुए, अतः ग्रामीण ऋणग्रस्तता इस क्षेत्र में एक बड़ी समस्या के रूप में उत्पन्न हुई।

### महालवाड़ी व्यवस्था

- यह व्यवस्था उत्तर भारत एवं उत्तर-पश्चिमी क्षेत्र में लागू की गई। इस व्यवस्था में कुल भू-भाग का 30 प्रतिशत भाग सम्मिलित था।
- इस व्यवस्था के अंतर्गत भू-राजस्व का प्रबंधन गाँव अथवा महाल के साथ किया गया।
- सामान्यतः भू-राजस्व की वसूली मुकद्दम (गाँव का

मुखिया) के माध्यम से की जाती थी।

- इसमें निजी उत्तरदायित्व का भी प्रावधान था, अर्थात् अगर कोई किसान अपने हिस्से का भू-राजस्व देने में असमर्थ हो तो उसकी भूमि महाल अधिगृहीत कर सकता था।
- रैयतवाड़ी व्यवस्था की तरह ही इस व्यवस्था में भू-राजस्व का प्रबंधन स्थायी रूप में न करके अस्थायी रूप में किया गया था।

**उद्देश्य-**

1. बढ़ते हुए ब्रिटिश साम्राज्य के खर्च को पूरा करने के लिये धन की ज़रूरत थी।
2. ब्रिटिश उद्योगों में निवेश करने के लिये बड़ी मात्रा में ध न की ज़रूरत थी।

**प्रभाव-**

- इस प्रणाली में भू-राजस्व की दर अत्यधिक रखी गई थी। अवध के किसानों में इसे लेकर गहरा असंतोष था और यही असंतोष 1857 के विद्रोह के समय हिंसक कृषक विद्रोह के रूप में फूट पड़ा।

**प्रश्नः 19वीं सदी में ब्रिटिश भारत की प्रशासानिक संरचना औद्योगिक पूँजीवाद के हित से प्रेरित रहा था। इस कथन का परीक्षण कीजिए।**

**उत्तरः** 19वीं सदी के भारत को ब्रिटिश औपनिवेशिक हित में विर्निमित वस्तुओं के बड़े बाजार के रूप में विकसित किया जाना था। इस उद्देश्य को प्राप्त करने के लिए ब्रिटिश भारत की प्रशासनिक संरचना में व्यापक सुधार एवं परिवर्तन करना आवश्यक था। इसलिए इस काल में कम्पनी की सरकार के द्वारा बेहतर कानून व्यवस्था, सक्षम न्याय व्यवस्था एवं भू-राजस्व व्यवस्था में सुधार के लए कदम उठाये गये।

- **कानून व्यवस्था :** कानून व्यवस्था के मार्ग में एक बड़ी चुनौती थी पिण्डारी, लुटेरे एवं राहजनी करने वाले ठग। अतः लॉर्ड हेस्टिंग्स एवं विलियम बेंटिंक ने क्रमशः पिण्डारियों और ठगों के दमन के लिए कदम उठाए।
- **न्याय व्यवस्था :** बाजार के विकास के लिए विधियों का संहिताकरण एवं सक्षम नयायालय की स्थापना करना आवश्यक था। इसलिए इस काल में मैकाले संहिता का निर्माण हुआ और 1861 के उच्च न्यायालय अधिनियम के आधार पर प्रेसिडेंसी नगरों में हाई कोर्ट की स्थापना हुई।
- **भू-राजस्व व्यवस्था :** किसानों पर दबाव कम हो तथा सरकार को अधिक राजस्व प्राप्त हो सके, इस लक्ष्य को ध्यान में रखकर नई भू-राजस्व व्यवस्था के रूप में रैयतवाड़ी और महालवाड़ी व्यवस्था लायी गई जिनसे जमींदारों को पृथक रखा गया। रैयतवाड़ी में किसानों के साथ तथा महालवाड़ी में गांव तथा महाल के रूप में भू-राजस्व का प्रबंधन किया गया।

इस प्रकार हम देखते हैं कि ब्रिटिश औद्योगिक पूँजीवाद ने प्रशासन के स्वरूप में परिवर्तन ला दिया।

**प्रश्नः 19वीं सदी में ब्रिटिश भारत में किये जाने वाले न्यायिक क्षेत्र में सुधार कहाँ तक बेंथमवादी विचारों से प्रेरित था? इस मत का परीक्षण कीजिए।**

**उत्तरः** 19वीं सदी के ब्रिटिश चिंतक जेरेमी बेंथम के विचार ने भारतीय न्याय व्यवस्था को प्रभावित किया। बेंथम ने न्याय व्यवस्था की निम्नलिखित कमजोरियों को उद्घटित किया-

- अधिकांश कानूनों का अलिखित होना।
- क्षेत्र के अनुसार कानूनों में बदलाव अर्थात् कानूनों का मानकीकरण नहीं होना।
- बंदी प्रत्यक्षीकरण जैसी व्यवस्था का अभाव।

इन विचारों के प्रभाव में, न्यायिक क्षेत्र में सुधार हेतु निम्नलिखित कदम उठाये गये-

1. 1813 के चार्टर के आधार पर गवर्नर-जनरल के विधि सदस्य के रूप में लॉर्ड मैकाले की नियुक्ति हुई और उसे विधियों के संहिताकरण का कार्य दिया गया। फिर 1837 में मैकाले विधि संहिता बनकर तैयार हुआ और आगे वह भारतीय दीवानी संहिता (1859) और भारतीय दण्ड संहिता (1860) के रूप में लागू हुआ।
2. भारत में न्यायिक द्वैतपरकता को समाप्त करने के क्रम में सदर अदालत और सुप्रीम कोर्ट को समाप्त कर दिया गया तथा 1861 के हाईकोर्ट एक्ट के आधार पर प्रेसिडेंसी नगरों में हाईकोर्ट की स्थापना की गई।

परन्तु गहराई से परीक्षण करने पर हमें यह ज्ञात होता है कि बेंथमवादी विचारधारा से अधिक न्यायिक सुधार की उत्प्रेरणा देने वाला रहा था ब्रिटिश औद्योगिक पूँजीवाद, जो भारत को ब्रिटिश विनिर्मित वस्तुओं के बाजार के रूप में विकसित करने के लिए प्रतिबद्ध था।

**प्रश्नः रैयतवाड़ी और महालवाड़ी व्यवस्था ने भारत के ग्रामीण जीवन पर क्या प्रभाव डाला?**

**उत्तरः** अगर हम रैयतवाड़ी और महालवाड़ी व्यवस्था का मूल्यांकन करते हैं तो हमें यह ज्ञात होता है कि ये व्यवस्था लगभग पूरी तरह ब्रिटिश हित में लायी गईं थीं तथा भारत के ग्रामीण जीवन के अनुकूल नहीं थीं। इसलिए ग्रामीण जीवन पर इसका निम्नलिखित नकारात्मक प्रभाव देखा गया-

1. किसानों पर दोनों व्यवस्थाओं में भू-राजस्व की दर अधि कतम रूप में निर्धारित की गई थी। इस कारण किसानों की क्रय शक्ति में ह्रास की शुरूआत हुई जिसके फलस्वरूप ग्रामीण गरीबी एवं ऋणग्रस्तता की स्थिति बनी रही।
2. भूमि में निजी स्वामित्व को आरोपित करने और उसे विक्रय योग्य बनाने के कारण भूमि के विखण्डन (Fragmenta-

tion of land) को बल मिला। इसलिए स्वतंत्रता के पश्चात् चकबंदी (Consolidation of land) पर बल दिया गया।

3. भूमि की खरीद-बिक्री और भू-राजस्व के अधिक दबाव के कारण ग्रामीण क्षेत्र में सीमान्त कृषक मजदूर बनते चले गये।
4. इस काल में नकदी फसलों के उत्पादन को प्रोत्साहन मिला। इस कारण ज्वार, बाजरा और मक्का जैसे परम्परागत फसलें प्रभावित हो गईं जिसके फलस्वरूप अकाल जैसी घटनाओं में वृद्धि हुई।

## औद्योगिक चरण (आर्थिक नीति)

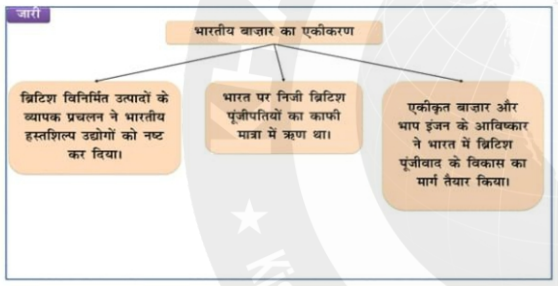

### कृषि का व्यवसायीकरण

- भारतीय कृषि क्षेत्र का दोहन ब्रिटिश औद्योगीकरण के हित में किया गया।
- यद्यपि कृषि का व्यवसायीकरण भारतीय कृषि में कोई नई बात नहीं थी, लेकिन ब्रिटिश शासन के अंतर्गत इसे व्यापक रूप से प्रोत्साहित किया गया।

**निम्नलिखित कारकों ने व्यवसायीकरण को प्रोत्साहन दिया-**

1. भू-राजस्व की दर अधिकतम होना।
2. ब्रिटिश उद्योगों के लिये कच्चे माल की आवश्यकता।
3. ब्रिटेन में नगरीय जनसंख्या के लिये बड़ी मात्रा में अनाजों की आवश्यकता होना।
4. आधुनिक यातायात एवं संचार के साधनों के विकास के साथ-साथ 1869 में स्वेज़ नहर का खुलना।

**सीमाएँ-**

1. औपनिवेशिक सरकार ने केवल उन्हीं फसलों को प्रोत्साहन दिया, जिनकी ब्रिटेन को आवश्यकता थी।
2. अधिसंख्य भारतीय किसानों के लिये यह एक थोपी गई प्रक्रिया थी।
3. औपनिवेशिक सरकार के अंतर्गत इस व्यवस्था में प्रत्येक स्तर पर लाभ प्राप्त करने वाला वर्ग अपना आर्थिक भार अपने नीचे वाले वर्ग पर डालकर स्वयं बच जाता था।
4. व्यावसायिक फसलों के उत्पादन ने मोटे अनाजों की खेती पर दुष्प्रभाव डाला, जो गरीब लोगों का भोजन था। फलतः इसने ग्रामीण क्षेत्र में भूखमरी की समस्या को बहुत तीव्र कर दिया।

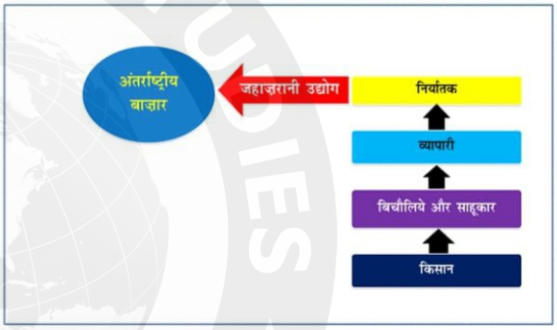


## विऔद्योगीकरण

### भारत के हस्तशिल्प उद्योग का पतन-

**कारण-**

1. चार्टर अधिनियम, 1813- इसके आधार पर भारत में कंपनी का व्यापारिक एकाधिकार समाप्त कर दिया गया तथा लंकाशायर एवं मैनचेस्टर के औद्योगिक उत्पादों से भारत का बाज़ार भरा जाने लगा। इस प्रक्रिया ने भारत के हस्तशिल्प उद्योग पर विपरीत प्रभाव डाला।
2. ब्रिटिश सरकार ने ब्रिटेन तथा यूरोप में भारतीय हस्तशिल्प उत्पादों के लिये बाज़ार बंद करने हेतु उन पर भारी कर लगाए।
3. रेलवे के माध्यम से भारत के दूरस्थ क्षेत्रों तक पहुँच बनाई गई तथा वहाँ ब्रिटिश वस्तुएँ पहुँचाई गईं।
4. कंपनी की साम्राज्यवादी प्रसार की नीति के कारण अधिकांश देशी रियासतों का ब्रिटिश साम्राज्य में विलय किया गया। ये रियासतें भारतीय हस्तशिल्प उत्पादों के लिये एक बड़ा बाज़ार थीं। विलय नीति के परिणामस्वरूप भारतीय हस्तशिल्प उद्योगों ने अपना आंतरिक बाज़ार भी खो दिया।

5. ब्रिटिश की शैक्षणिक-सामाजिक नीति ने भारत में एक ऐसा वर्ग पैदा किया, जिसकी रुचि ब्रिटिश वस्तुओं के प्रति थी।

**प्रभाव-**

- ब्रिटिश ने भारत के परंपरागत ढाँचे को तोड़ दिया, किंतु उसकी जगह आधुनिक उद्योगों के निर्माण के द्वारा इसकी क्षतिपूर्ति नहीं की जा सकी। परिणामत: कृषि एवं उद्योगों के मध्य संतुलन बिगड़ जाने से कृषि पर अधिकाधिक लोगों की निर्भरता बढ़ गई। अत: भारत में ग्रामीण गरीबी एवं ऋणग्रस्तता को बल मिला।

## आधुनिक यातायात एवं संचार व्यवस्था

- **रेलवे**

**उद्देश्य-**

1. भारत में दूरस्थ क्षेत्रों तक ब्रिटिश वस्तुओं को पहुँचाना।
2. भारत के दूरस्थ क्षेत्रों से कच्चे माल की प्राप्ति।
3. रेलवे निर्माण के माध्यम से भारत में ब्रिटिश पूंजीपतियों को सुरक्षित पूंजी निवेश की गारंटी देना।
4. ब्रिटेन स्थित लौह और इस्पात उद्योग के लिये भारत में बाज़ार बनाना।
5. भारत के दूरस्थ क्षेत्रों में सैनिकों को शीघ्रता से पहुँचाना।

**सकारात्मक पक्ष:-**

1. भारतीय बाजार का एकीकरण हुआ।
2. रेलवे इंजन के कारण आधुनिक फैक्ट्री प्रणाली की शुरूआत हुई।
3. रेलवे एवं यातायात के साधनों के विकास के फलस्वरूप भारत में दूर-दराज़ के क्षेत्रों का आपस में जुड़ाव हुआ, जिसके कारण अनजाने में ही भारत में राजनीतिक एकीकरण को बल मिला।

**नकारात्मक पक्ष :-**

1. गृहव्यय की राशि में वृद्धि होने के कारण इसने भारतीय राजकोष पर विपरीत प्रभाव डाला।
2. रेलवे के लिये निर्माण सामग्री सीधे ब्रिटेन से आयातित होने के कारण यह औद्योगीकरण को प्रोत्साहन नहीं दे सका, बल्कि इसने कच्चे माल के निर्यात और तैयार माल के आयात को प्रोत्साहन देकर हस्तशिल्प उद्योग को पतन की स्थिति में पहुँचाया, अर्थात् विऔद्योगीकरण को प्रोत्साहन दिया।
3. इसने भारत से अनाज के निर्यात को प्रोत्साहन देकर अकाल की तीव्रता को बढ़ा दिया।

- **अकाल**

**कारण-**

1. भू-राजस्व की रकम अधिकतम निर्धारित होने के कारण किसानों की क्रयशक्ति कम हो गई, जिसके कारण वे ज़रूरत के समय भी अनाजों को खरीदकर नहीं खा सकते थे।
2. व्यावसायिक फसलों की खेती के कारण मोटे अनाजों के उत्पादन में गिरावट आई, जो गरीबों का आहार था।
3. कृषि पर जनसंख्या का बोझ बढ़ा।
4. रेलवे ने मोटे अनाजों की जगह व्यावसायिक फसलों की खेती को प्रोत्साहन दिया, क्योंकि रेलवे के माध्यम से निर्यात की जाने वाली फसलों का संग्रह करना आसान हो गया।
5. भारत में अनाजों की कमी के समय भी ब्रिटिश के द्वारा भारत से बाहर लगातार अनाजों का निर्यात किया जाता रहा।

## धन की निकासी

**'धन की निकासी' के स्वरूप/प्रकृति में परिवर्तन-**

- कंपनी ने निरंतर राजस्व खाते से प्राप्त रकम का व्यापारिक खाते में उपयोग किया। यह स्थिति 1813 ई. तक बनी रही। फिर 1813 ई. के चार्टर के आधार पर कंपनी के राजस्व खाते एवं व्यापारिक खाते, दोनों को एक-दूसरे से अलग कर दिया गया।
- अत: 1813 के बाद धन की निकासी ने अपना रूप परिवर्त्तित कर लिया। इस चरण में अपना व्यापारिक अधिकार खोने के बाद कंपनी के समक्ष अपने शेयरधारकों को मुनाफा देने की समस्या उपस्थित हुई। कंपनी ने इस समस्या के समाधान के लिये कृषि उत्पादों के निर्यात, विशेष रूप से चीन में अफीम को प्रोत्साहन दिया।
- जब चीन ने अफीम के व्यापार को रोकने की कोशिश की तो ब्रिटेन व चीन के मध्य अफीम युद्ध शुरू हो गया।

**प्रश्न: कृषि के व्यावसायीकरण से क्या तात्पर्य है? इसने किस प्रकार भारत में अकाल, गरीबी एवं ऋणग्रस्तता जैसी घटनाओं को प्रोत्साहन दिया? स्पष्ट कीजिए।**

**उत्तर:** कृषि के व्यावसायीकरण से तात्पर्य है खेती में परम्परागत फसलों की जगह नकदी फसलों की खेती पर बल देना। ब्रिटिश औपनिवेशिक शासन के अंतर्गत इस प्रक्रिया को बल मिला। ब्रिटिश सरकार ने उन उत्पादों पर बल दिया जिनसे स्वयं सरकार को फायदा था, उदाहरण के लिए कपास, नील, अफीम, गन्ने, गेहूं, दलहन, चावल, जूट आदि। इन उत्पादों को ब्रिटेन निर्यात किया गया।

दूसरी तरफ भारतीय किसानों के लिए यह एक थोपी गई प्रक्रिया थी। अधिकांशत: किसानों ने इसे बाध्यता के कारण अपनाया था और यह बाध्यता थी भू-राजस्व की अधिकतम दर एवं महाजनी कर्ज को अदा करने की बाध्यता। चूंकि इसका लाभ किसानों को नहीं बल्कि व्यापारी एवं महाजनों को मिला इसलिए उल्टा इसने किसानों के बीच गरीबी, अकाल एवं भूखमरी तथा ऋणग्रस्तता को जन्म दिया।

**गरीबी :** भू-राजस्व की दर के दबाव के कारण प्रति व्यक्ति आय में गिरावट तथा व्यावसायिक खेती में अधिक निवेश होने और कम लाभ मिलने के कारण ग्रामीण गरीबी एक आम घटना हो गई।

**अकाल :** नकदी फसलों की खेती के कारण मोटे अनाजों के उत्पादन को धक्का लगा जिसके कारण अकाल एवं भूखमरी की घटना बढ़ गयी।

**ग्रामीण ऋणग्रस्तता:** नकदी फसलों की खेती में अधिक निवेश करने की जरूरत होती है, इसके लिए किसानों को महाजनी कर्ज लेना होता। वहीं दूसरी तरफ इसका अपेक्षित लाभ किसानों को नहीं मिल पाता। अत: किसान महाजनी कर्ज चुकाने में असमर्थ हो जाते और कर्ज में फंस जाते।

**प्रश्न: परीक्षण कीजिए कि औपनिवेशिक भारत में पारंपरिक कारीगरी उद्योग के पतन ने किस प्रकार ग्रामीण अर्थव्यवस्था को अपंग बना दिया? ( UPSC-2016 )**

**उत्तर:** 18वीं सदी तक भारतीय अर्थव्यवस्था कृषि एवं कारीगरी उद्योग के उचित संतुलन पर आधारित थी। भारत एक समृद्ध कृषि आधार के साथ-साथ भारतीय कारीगरी उद्योगों के लिए एक बड़ा निर्यात बाजार भी था। यही वजह है कि भारत की अर्थव्यवस्था समृद्ध अवस्था में थी।

**भारत के कारीगरी उद्योग अथवा दस्तकारी दो समूहों में विभाजित थे-**

1. **नगरीय दस्तकारी :** यह विश्व मानक स्तर का उत्पादन करती। भारत के सूती वस्त्र उद्योग, मलमल उद्योग, रेशम उद्योग, लौह उद्योग, ये सभी विश्व प्रसिद्ध थे। नगरीय दस्तकारी में श्रम की जरूरत को पूरा करने के लिए ग्रामीण शिल्पियों को भी लगाया जाता। इससे ग्रामीण अर्थव्यवस्था को भी फायदा होता।
2. **ग्रामीण दस्तकारी :** यह ग्रामीण अर्थव्यवस्था की रीढ़ थी। इससे निम्नलिखित रूप में फायदा होता।
   - ग्रामीण शिल्पी अतिरिक्त समय में नगरीय दस्तकारी के रूप में काम करते।
   - किसान खेती से बचे हुए समय में कारीगरी उत्पादन में लगाते।
   - महिलाएँ भी सूत की कटाई एवं बुनाई करती।

परन्तु ब्रिटिश व्यापार एवं उद्योग नीति के परिणामस्वरूप ग्रामीण तथा नगरीय कारीगरी दोनों का पतन हो गया। इसके कारण न केवल किसान अतिरिक्त आमदनी से वंचित रहे बल्कि आधुनिक उद्योगों की स्थापना न होने के कारण कारीगरी कृषि की ओर मुड़ गई तथा कृषि पर जनसंख्या का अधिभार बढ़ गया।

## प्रैक्टिस वर्क

***प्रश्न:*** *19वीं सदी के भारत में ब्रिटिश कंपनी के द्वारा अपनाई गई आर्थिक नीति का प्रभाव पूँजीवादी रूपांतरण था अथवा औपनिवेशीकरण? अपने मत के पक्ष में उत्तर दीजिए।*

***प्रश्न:*** *यूरोप के विपरीत जहाँ रेलवे ने औद्योगिकरण में अपनी भूमिका निभाई थी, भारत में रेलवे ने विऔद्योगिकरण में अपना योगदान दिया। इस कथन का परीक्षण कीजिए।*

## सामाजिक नीति

औपनिवेशिक सरकार केवल संबंधित देश की अर्थव्यवस्था का दोहन ही नहीं करती बल्कि उसके समाज एवं संस्कृति को भी प्रभावित करती है। ब्रिटिश औद्योगिक पूँजीवाद ने भारत की सामाजिक संरचना में सुधार एवं परिवर्तन पर बल दिया।

इसके पीछे उद्देश्य यह था कि सुधार और परिवर्तन के पश्चात् भारत ब्रिटिश विनिर्मित वस्तुओं के लिए एक बेहतर बाजार की भूमिका निभाएगा। ब्रिटिश का विश्वास था कि समाज सुधार के परिणामस्वरूप भारतीय समाज परंपरागत ढाँचे से बाहर निकलकर अंग्रेजी शिक्षा को स्वीकार करेगा। फिर अंग्रेजी शिक्षा भारतीयों के ऐसे वर्ग को जन्म देती जिसकी रूचि ब्रिटिश वस्तुओं में होती।

इसके अतिरिक्त समाज सुधार के पीछे एक दूसरा कारक ब्रिटिश चिंतकों के प्रभाव को माना जाता है। ब्रिटिश उदारवादी चिंतक भारत में सुधार और परिवर्तन की माँग कर रहे थे तथा भारतीयों को सभ्य बनाने का दावा करते रहे थे। उदाहरण के लिए -

- सती प्रथा उन्मूलन कानून (1829-30)
- शिशु हत्या को रोकने वाले कानूनों को 1830 के दशक में कड़ाई से लागू किया गया।
- 1843 में दास व्यवस्था उन्मूलन से संबंधित कानून।
- 1856 में विधवा पुनर्विवाह कानून।

## सांस्कृतिक नीति

### अंग्रेजी शिक्षा अथवा मैकाले शिक्षा पद्धति

**शिक्षा के क्षेत्र में प्राच्य एवं पाश्चात्य विवाद क्या है?**

उसके निम्नलिखित आधार थे -

1. शिक्षा का आधार क्या हो?
2. शिक्षा का माध्यम क्या हो?

- प्रथम मुद्दे पर कोई बड़ा विवाद नहीं था बल्कि दूसरे मुद्दे पर विवाद बना हुआ था। उस समय बंगाल लोक शिक्षा समिति दो गुटों में बंटी हुई थीं- प्राच्यवादी एवं पाश्चात्यवादी। प्राच्यवादी चाहते थे कि भारतीयों को उनकी क्लासिकल भाषा में शिक्षा दी जाए तभी वे पश्चिमी ज्ञान-विज्ञान की शिक्षा को स्वीकार करेंगे।

- दूसरी तरफ पाश्चात्यवादी अंग्रेजी भाषा में शिक्षा देने के पक्षपाती थे। जब लॉर्ड मैकाले बंगाल लोक शिक्षा समिति का अध्यक्ष बना तो स्वाभाविक रूप में जीत पाश्चात्यवादियों की हो गई। 2 फरवरी, 1835 को लॉर्ड मैकाले ने शिक्षा नीति जारी कर दी।

**विप्रवेशन की अवधारण क्या है?**

- ब्रिटिश एक बड़ी जनसंख्या को अंग्रेजी शिक्षा प्रदान नहीं कर सकते थे, इसलिए मैकाले ने एक योजना रखी कि पहले मुठ्ठी भर भारतीय अंग्रेजी भाषा के माध्यम से आधुनिक ज्ञान-विज्ञान की शिक्षा प्राप्त करेंगे और फिर भारतीय भाषा में उसे शेष भारतीयों तक पहुँचायेंगे परन्तु यह योजना सफल नहीं हो सकी।

**मैकाले शिक्षा लागू करने के पीछे उद्देश्य :**

- ब्रिटिश विनिर्मित वस्तुओं के लिए बाजार प्राप्त करना।
- भारतीयों को निम्न सरकारी पदों पर नियुक्ति योग्य बनाना।
- इसाई धर्म का प्रसार करना।
- भारत में ब्रिटिश शासन के लिए एक समर्थक वर्ग तैयार करना।

**मैकाले शिक्षा पद्धति का दुष्परिणाम :**

- भारत में जनशिक्षा ध्वस्त हो गई।
- सभी प्रकार का मौलिक ज्ञान ब्रिटेन में विकसित किया जाता और भारत से केवल नकल करने की अपेक्षा की जाती।
- भारतीयों को आर्थिक एवं ज्ञान-विज्ञान की शिक्षा के बजाय साहित्य और दर्शन की शिक्षा ही अधिक दी गई।
- मैकाले शिक्षा पद्धति के कारण भारत और इंडिया में विभाजन बना रहा।

**योगदान :**

- अंग्रेजी भाषा के माध्यम से भारतीय बुद्धिजीवियों का एक वर्ग पाश्चात्य विचारधारा के सम्पर्क में आया और इस कारण भारत में राष्ट्रवाद को प्रोत्साहन मिला।
- अंग्रेजी भाषा के कारण भारत 1990 के दशक में कम्प्यूटर साफ्टवेयर के क्षेत्र में आगे बढ़ सका।

## उदारवाद और उपयोगितावाद

**समानताएँ-**

1. दोनों ब्रिटेन में औद्योगिक क्रांति की उपज थे।
2. वे दोनों प्राच्यवादी विचारधारा के मुखर/प्रबल आलोचक थे। उनका कहना था कि प्राच्यविदों ने भारत की अनुचित प्रशंसा की थी।
3. दोनों ने भारतीय अतीत और संस्कृति पर हमला करते हुए भारतीयों को असभ्य एवं बर्बर तथा भारतीय समाज को पतनशील करार दिया। उन्होंने भारतीयों को सभ्य बनाने तथा विकास के मार्ग पर ले जाने के लिये भारत में कठोर ब्रिटिश शासन का औचित्य सिद्ध किया।

**दोनों के बीच अंतर-**

1. उदारवादियों का मानना था कि यद्यपि भारत इस समय पतन के दौर से गुज़र रहा है, लेकिन अंग्रेज़ी शिक्षा एवं ब्रिटिश राजनीतिक संस्थाओं के माध्यम से भारत को विकास के रास्ते पर ले जाया जा सकता है। भारत में इस दृष्टिकोण का प्रतिनिधित्व लॉर्ड मैकाले और ट्रैवनियर कर रहे थे। लेकिन, दूसरी ओर जेरेमी बेंथम जैसे उपयोगितावादियों ने उदारवादियों के मत को नकारते हुए कहा कि भारतीय अपने आप प्रगति नहीं कर सकते हैं, इसलिये भारत में ब्रिटिश सरकार को एक स्कूल मास्टर की भूमिका निभानी चाहिये तथा विधि निर्माण के माध्यम से भारत में विकास को प्रोत्साहन दिया जाना चाहिये।
2. उदारवादियों का मानना था कि विकास के मार्ग पर बढ़ते हुए एक ऐसा समय आएगा, जब भारतीय स्वतंत्रता प्राप्त कर लेंगे, लेकिन उपयोगितावादियों ने इस मत को खारिज करते हुए कहा कि ब्रिटिश को ही हमेशा भारतीयों की ओर से भारत के विकास के लिये काम करना चाहिये। उसका यह भी कहना था कि भारतीयों को स्वतंत्रता की नहीं, बल्कि 'सुख' की ज़रूरत है, जो कि एक प्रभावी सरकार ही प्रदान कर सकती है। इसलिए ब्रिटिश सरकार उसे सुख दे सकती।
3. उदारवादियों का मानना था कि भारत में ब्रिटिश शासन का उद्देश्य भारतीयों को सभ्य बनाना होना चाहिये, अर्थात् उन्होंने भारत को सभ्य बनाने के ब्रिटिश मिशन की वकालत की। लेकिन, उपयोगितावादियों ने उनके मत को खारिज करते हुए कहा कि भारतीय कभी सभ्य बन ही नहीं सकते।

**प्रश्नः ब्रिटिश औद्योगिक पूँजीवाद ने भारतीय अर्थव्यवस्था का ही दोहन नहीं किया अपितु भारतीय समाज एवं संस्कृति के क्षेत्र में भी परिवर्तन की दिशा तय कर दी। टिप्पणी कीजिए।**

**उत्तर :** 19वीं सदी में ब्रिटिश औद्योगिक पूँजीवाद ने भारत के संदर्भ में ब्रिटिश नीति को दिशा दी। इसने भारतीय अर्थव्यवस्था के साथ-साथ भारतीय समाज और संस्कृति पर भी अपना प्रभाव छोड़ा।

ब्रिटिश नीति का उद्देश्य रहा था ब्रिटिश औद्योगिक पूँजीवाद के हित में भारतीय अर्थव्यवस्था का दोहन करना तथा भारत को विनिर्मित वस्तुओं के आयातक एवं कच्चे माल के निर्यातक के रूप में परिवर्तन कर देना। परन्तु चूँकि उपनिवेशवाद समाज और संस्कृति पर भी अपना प्रभाव छोड़ता है इसलिए ब्रिटिश कम्पनी ने सामाजिक और सांस्कृतिक क्षेत्र में सुधार के लिए पहल की। इसका मुख्य उद्देश्य रहा था भारत को ब्रिटिश

वस्तुओं के बाजार के रूप में विकसित करना। दूसरी तरफ सुधार के लिए दबाव ब्रिटिश उदारवादी एवं उपयोगितावादी चिंतकों की ओर से भी बना हुआ था, इसलिए इस संदर्भ में निम्नलिखित कदम उठाये गये-

1. समाज सुधार के लिए विधि निर्माण अर्थात् सती प्रथा उन्मूलन (1829-30), दास व्यवस्था उन्मूलन (1843), विधवा पुनर्विवाह कानून (1856) आदि।
2. अंग्रेजी शिक्षा के माध्यम से भारतीयों के सांस्कृतिक दृष्टिकोण में बदलाव लाने का प्रयास किया गया। मैकाले के शब्दों में, एक ऐसे वर्ग को जन्म देना जो अपनी रूचि और दृष्टिकोण में ब्रिटिश हों।

इस प्रकार, ब्रिटिश औद्योगिक पूँजीवाद ने भारतीय अर्थव्यवस्था के साथ-साथ समाज और संस्कृति को भी परिवर्तित कर दिया।

■■■

KHAN GLOBAL STUDIES
Kisan Cold Storage Campus, Musallahpur, Patna-6
KHAN SIR